

॥ श्रीः ॥  
विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

७८  
\*\*\*\*\*

# श्रीमार्कण्डेयपुराण भाषा टीका

टीकाकार



चौखम्बा विद्याभवन

( भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक )

बौक ( बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे )

पो० बा० नं० १०६९

वाराणसी २२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य ४००-०० रु. पत्राकार ३५०-०० रु.

संस्करण १९९५

## अथ मार्कण्डेयपुराणभाषाटीकाकी-विषयानुक्रमणिका ।

| अध्यायः | विषयः                                                                                                                  | पत्रम्. | अध्यायः                                                                                | विषयः | पत्रम्.                                                                        | अध्यायः | विषयः                                                                               | पत्रम्. | अध्यायः                                    | विषयः | पत्रम्. |
|---------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|----------------------------------------------------------------------------------------|-------|--------------------------------------------------------------------------------|---------|-------------------------------------------------------------------------------------|---------|--------------------------------------------|-------|---------|
| १       | जैमिनिके महाभारतविषयक प्रश्न और मार्कण्डेयका वपुअप्सरा शापकथन                                                          | १       | याकथन ... ..                                                                           | १३    | १२ नरकविवरण ...                                                                | ४१      | अनुग्रह ... ..                                                                      | ६२      | १८ कुवलयाश्वको कुवलय-नामक अश्वका मिलना     | ६४    |         |
| २       | चटकचतुष्टयकी उत्पत्ति                                                                                                  | २       | ६ बलदेवजीकी ब्रह्महत्या-जनित पापप्रक्षालनार्थ तीर्थयात्राका कारणवर्णन                  | १५    | १३ यमदूतसे विदेहराजकीवार्ता                                                    | ४३      | १९ कुवलयाश्वका पाताल-गमन, मदालसापरिणय और सेनासहित पाताल केतु दैत्यका वध ...         | ६६      | २० मदालसावियोग ...                         | ७२    |         |
| ३       | शमीक मुनिके समीप पक्षियोंका निजशापवृत्तान्त कहकर विंध्याचलमें जाना                                                     | ७       | ७ द्रौपदीके पांच पुत्र अवि-वाहित अवस्थामें मृत्युको प्राप्तहुए इसकाकारणवर्णन           | १६    | १४ कर्मफलजनित नरकया-तनावर्णन ... ..                                            | ४४      | २१ तपस्याके प्रभावेसे अश्व-तरको मदालसाकी प्राप्ति और कुवलया श्वका नागराजाके घर जाना | ७४      | २२ कुवलयाश्वको पुनर्वार मदालसाप्राप्ति ... | ७९    |         |
| ४       | चटकगणोंके समीप जैमिनि-के पूर्वोक्त चार प्रश्न और पक्षियोंकेद्वारा भगवान्का चतुर्व्यूहावतार और प्रथम प्रश्नोत्तरकथन ... | ११      | ८ हरिश्चन्द्रका उपारूपान ...                                                           | २०    | १५ कर्मविपाक और प्राणि-योंका नरकसे छुटकारा                                     | ४९      |                                                                                     |         |                                            |       |         |
| ५       | द्रौपदीके पांच पति होनेका कारण और इन्द्रविक्रि-                                                                        |         | ९ आडिबकयुद्ध ... ..                                                                    | ३३    | १६ पतिव्रतामाहात्म्य और अनसूयाको वरलाभ ...                                     | ५३      |                                                                                     |         |                                            |       |         |
|         |                                                                                                                        |         | १० प्राणियोंके जन्मादि-विषयमें प्रश्न और पिता-पुत्रसम्वादवर्णनद्वारा जीवविपत्तिकथन ... | ३५    | १७ चन्द्र, दत्तात्रेय और दुर्वासाकी उत्पत्ति ...                               | ५५      |                                                                                     |         |                                            |       |         |
|         |                                                                                                                        |         | ११ प्राणियोंकी उत्पत्तिकारण ...                                                        | ४०    | १८ काचवीर्य अर्जुनके प्रति गर्भमुक्तिका उपदेश और दत्तात्रेय वृत्तान्तवर्णन ... | ५७      |                                                                                     |         |                                            |       |         |
|         |                                                                                                                        |         |                                                                                        |       | १७ काचवीर्यके प्रति दत्तात्रेयका                                               |         |                                                                                     |         |                                            |       |         |

| अध्यायः | विषयः                                  | पत्रम् |
|---------|----------------------------------------|--------|
| २३      | मदालसाका पुत्र उल्लापन                 | ८२     |
| २४      | राजधर्मकथन                             | ८५     |
| २५      | वर्णाश्रमधर्मकीर्तन                    | ८६     |
| २६      | गार्हस्थ्यधर्मनिरूपण                   | ८८     |
| २७      | नित्य नैमित्तिकादि श्राद्ध-<br>कल्प    | ९०     |
| २८      | पार्वणश्राद्धकल्प                      | ९२     |
| २९      | श्राद्धमें प्रशस्ताप्रशस्त-<br>निरूपण  | ९५     |
| ३०      | काम्यश्राद्धफलकथन                      | ९६     |
| ३१      | सदाचारवर्णन                            | ९७     |
| ३२      | वज्यावर्ज्यकथन                         | १०३    |
| ३३      | अलर्कको शासनयुक्त<br>अंगुठीकी प्राप्ति | १०७    |
| ३४      | अलर्कको आत्मविवेक                      | १०८    |
| ३५      | दत्तात्रेयसे अलर्कका योग<br>पूछना      | ११०    |

| अध्यायः | विषयः                                                | पत्रम् |
|---------|------------------------------------------------------|--------|
| ३६      | योगाध्याय                                            | १११    |
| ३७      | योगसिद्धि                                            | ११४    |
| ३८      | योगिचर्या                                            | ११६    |
| ३९      | ओङ्कारस्वरूपकथन                                      | ११७    |
| ४०      | अरिष्टकथन                                            | ११८    |
| ४१      | अलर्ककी योगसिद्धि एवं<br>जड और उसके पिताकी<br>तपस्या | १२२    |
| ४२      | ब्रह्माण्ड और ब्रह्मोत्पत्ति-<br>कथन                 | १२४    |
| ४३      | ब्रह्मजीकी आयुका<br>परिमाण                           | १२७    |
| ४४      | प्राकृत और वैकृत सृष्टि-<br>कथन                      | १२९    |
| ४५      | देवादिकी सृष्टिका वर्णन                              | २३१    |
| ४६      | मिथुनसृष्टि और स्थान-<br>कल्पना                      | १३२    |

| अध्यायः | विषयः                                                     | पत्रम् |
|---------|-----------------------------------------------------------|--------|
| ४७      | यक्षानुशासन                                               | १३६    |
| ४८      | दौःसहोत्पत्ति                                             | १४१    |
| ४९      | रुद्रादिसृष्टि                                            | १४७    |
| ५०      | स्वायम्भुवमन्वन्तर-<br>कथन ( १ )                          | १४८    |
| ५१      | जम्बूद्वीपवर्णन                                           | १५०    |
| ५२      | जम्बूद्वीपके वनपर्वता-<br>दिका विवरण                      | १५१    |
| ५३      | गंगावतार                                                  | १५२    |
| ५४      | भारतवर्षविभाग                                             | १५३    |
| ५५      | कूर्मसंस्थान                                              | १५६    |
| ५६      | भद्रास्वादिवर्षवर्णन                                      | १५९    |
| ५७      | क्रिष्णुस्वादिवर्षवर्णन                                   | १६१    |
| ५८      | स्वारोचिषमन्वन्तरारम्भ<br>( २ ) ब्राह्मणवरूथिनी-<br>संवाद | १६२    |
| ५९      | कलिवरूथिनीसमागम                                           | १६५    |

| अध्यायः | विषयः                                                                                            | पत्रम् |
|---------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
| ६०      | स्वारोचिका जन्म और<br>मनोरमाके संग विवाह                                                         | १६७    |
| ६१      | मनोरमाकी दोनों सखि-<br>योंके संग स्वारोचिका विवाह                                                | १७०    |
| ६२      | चक्रवाकी और शृगका<br>स्वारोचिको तिरस्कार                                                         | १७१    |
| ६३      | स्वारोचिष मनुकी उत्पत्ति                                                                         | १७२    |
| ६४      | स्वारोचिषमन्वन्तर-<br>कथन                                                                        | १७४    |
| ६५      | निधिनिर्यय                                                                                       | १७४    |
| ६६      | औत्तममन्वन्तरारम्भ-<br>म्भ ( ३ ) नृपति उत्तमका<br>अपनी भार्याका त्याग और<br>द्विजभार्याका हूँदना | १७७    |
| ६७      | द्विजभार्याको उसके<br>पतिके घर भोजना                                                             | १८०    |
| ६८      | कषिके संग उत्तमका                                                                                |        |

| अध्यायः | विषयः                                                                                       | पत्रम् |
|---------|---------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
|         | कथोपकथन ...                                                                                 | १८२    |
| ६९      | औत्तममनुकी उत्पत्ति                                                                         | १८४    |
| ७०      | औत्तममन्वन्तरकथन                                                                            | १८६    |
| ७१      | तामसमन्वन्तरवर्णन (४)                                                                       | "      |
| ७२      | रैवतमन्वन्तरवर्णन (५)                                                                       | १८९    |
| ७३      | चाक्षुषमन्वन्तरवर्णन (६)                                                                    | १९३    |
| ७४      | वैवस्वतमन्वन्तर आरम्भ<br>( ७ ) वैवस्वत मनुकी<br>उत्पत्ति और विश्वकर्मा-<br>का सूर्यशासन ... | १९६    |
| ७५      | देव और ऋषिगणकर्तृक<br>सूर्यका स्तव एवं अश्विनी-<br>कुमार और रेवन्तकी<br>उत्पत्ति ...        | १९७    |
| ७६      | वैवस्वतमन्वन्तरकथन                                                                          | १९९    |
| ७७      | सावर्णिक मन्वन्तर<br>आरम्भ ( ८ ) सावर्णिक                                                   |        |

| अध्यायः | विषयः                             | पत्रम् |
|---------|-----------------------------------|--------|
|         | मन्वन्तरके ऋष्यादि-<br>कथन ...    | २००    |
| ७८      | देवीमाहात्म्य मधुकैटभ-<br>वध ...  | "      |
| ७९      | महिषासुरसैन्यवध ...               | २०४    |
| ८०      | महिषासुरवध ...                    | २०७    |
| ८१      | शक्रादिकृत देवीस्तव...            | २०९    |
| ८२      | देवीसे शुभके दूतका<br>कथोपकथन ... | २१२    |
| ८३      | धूम्रलोचनवध ...                   | २१६    |
| ८४      | चण्डमुण्डवध ...                   | २१७    |
| ८५      | रक्तबीजवध ...                     | २१८    |
| ८६      | निशुंभवध ...                      | २२१    |
| ८७      | शुंभवध ...                        | २२२    |
| ८८      | देवीस्तोत्र ...                   | २२४    |
| ८९      | देवताओंको देवीका<br>वरदान ...     | २२६    |

| अध्यायः | विषयः                                                                              | पत्रम् |
|---------|------------------------------------------------------------------------------------|--------|
| ९०      | सुरथ और वैश्यको<br>देवीका वरदान ...                                                | २२८    |
| ९१      | दक्षसावर्ण ब्रह्मसावर्ण,<br>धर्मसावर्ण रुद्रसावर्ण<br>और रौच्यमन्वन्त-<br>रकथन ... | २२९    |
| ९२      | रुचिको पितरोंका<br>गार्हस्थ्य उपदेश ...                                            | २३०    |
| ९३      | रुचिकृतपुत्रस्तव ...                                                               | २३२    |
| ९४      | रुचिको पितरोंका वर-<br>दान ...                                                     | २३४    |
| ९५      | रौच्यमनुका जन्म...                                                                 | २३६    |
| ९६      | भात्यमन्वन्तर आरम्भ<br>( १४ ) शान्तिकृत<br>अग्निस्तोत्र ...                        | "      |
| ९७      | भौत्यमन्वन्तर और<br>सर्व मन्वन्तरश्रवण-                                            |        |

| अध्यायः | विषयः                                                    | पत्रम् |
|---------|----------------------------------------------------------|--------|
|         | फलकथन...                                                 | २४०    |
| ९८      | राजवंशानुकीर्तनआरं-<br>भ और मार्त्तण्डस्वरूप-<br>कथन ... | २४२    |
| ९९      | वेदमय मार्त्तण्डकी<br>उत्पत्ति ...                       | २४३    |
| १००     | ब्रह्मकृतरविस्तव ...                                     | २४४    |
| १०१     | कश्यप प्रजापतिकी<br>सृष्टि और अदिति-<br>कृत दिवाकरस्तुति | २४५    |
| १०२     | अदितिके गर्भसे<br>आदित्यका जन्म-<br>ग्रहण ...            | २४७    |
| १०३     | भानुतनुलेखन ...                                          | २४८    |
| १०४     | विश्वकर्माकृतसूर्य-<br>स्तव ...                          | २५१    |
| १०५     | सूर्य सन्तानगणका                                         |        |

| अध्यायः | विषयः                                                                                         | पत्रम् |
|---------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
|         | अधिकारलाभ ...                                                                                 | २५२    |
| १०६     | सत्यवर्द्धनकी आयु-<br>वृद्धिकामनासे प्रजा-<br>की सूर्यआराधना<br>और विप्रमणकृत<br>भानुस्तव ... | २५३    |
| १०७     | राजा और प्रजागण-<br>की आयुवृद्धि ...                                                          | २५७    |
| १०८     | सूर्यवेशानुकुल ...                                                                            | २५९    |
| १०९     | पूषन्नोपाख्यान ...                                                                            | २६०    |
| ११०     | नाभागचरित ...                                                                                 | २६१    |
| १११     | प्रमतिशाप ...                                                                                 | २६३    |
| ११२     | रुपावतीको अग-                                                                                 |        |

| अध्यायः | विषयः                                                 | पत्रम् |
|---------|-------------------------------------------------------|--------|
|         | स्त्यजाक भ्राताका<br>शाप ... ..                       | २६४    |
| ११३     | मलन्दन और वत्सपी-<br>चरित ... ..                      | २६५    |
| ११४     | प्रशुप्रजाति और<br>खनित्रके राज्यका वि-<br>वरण ... .. | २६९    |
| ११५     | खनित्रचरित्र ...                                      | २७१    |
| ११६     | विंशचरित ...                                          | २७२    |
| ११७     | खनित्रचरित ...                                        | "      |
| ११८     | करन्धमचरित ...                                        | २७५    |
| ११९     | अवीक्षितका जन्म<br>और वैशालिनीहरण                     | २७६    |
| १२०     | युद्धमें अवीक्षितका                                   |        |

| अध्यायः | विषयः                                                                | पत्रम् |
|---------|----------------------------------------------------------------------|--------|
|         | बंधन ... ..                                                          | २७७    |
| १२१     | अवीक्षितका उद्धार और<br>वैराग्य ... ..                               | २७८    |
| १२२     | अवीक्षितका पितृप्रे-<br>मंभीकार... ..                                | २८१    |
| १२३     | अवीक्षितके द्वारा वैशा-<br>लिनीका उद्धार ...                         | २८३    |
| १२४     | अवीक्षितके संग<br>वैशालिनीका विवाह<br>और मरुत्तराजाका<br>जन्म ... .. | २८५    |
| १२५     | मरुत्तकी राज्यप्राप्ति                                               | २८७    |
| १२६     | मरुत्तके यज्ञका विव-<br>रण और उसके प्रति                             |        |

| अध्यायः | विषयः                                       | पत्रम् |
|---------|---------------------------------------------|--------|
|         | पितामही वीराके उप-<br>देशवाक्य ... ..       | २८९    |
| १२७     | नागोंका भ्रातृप्रेमकी<br>शरणमें आना ...     | २९०    |
| १२८     | मरुत्तचरित ...                              | २९२    |
| १२९     | नरिष्यन्तचरित ...                           | २९४    |
| १३०     | दमचरित, सुमना-<br>स्वयम्बर... ..            | २९६    |
| १३१     | नरिष्यन्तवध ...                             | २९८    |
| १३२     | वपुष्मान्के वधार्थे दम-<br>की प्रतिज्ञा ... | ३००    |
| १३३     | वपुष्मान्का वध ...                          | ३०१    |
| १३४     | भार्कण्डेय पुराण सुन-<br>नेका फल ... ..     | ३०३    |

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।